Class - VIII
Subject - HINDI
पाठ – 2 नीलकंठ (महादेवी वर्मा)

मौखिक

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. लेखिक ने ड्राइवर को कहाँ चलने का संकेत किया?

उत्तर लेखिक ने ड्राइवर को बड़े मियाँ चिडियाँ वाले की दुकान को ओर चलने का आदेश दिया।

ख. शंकरगढ़ से चिड़ीमार कितने बच्चे पकड़कर लाया था।

उत्तर शंकरगढ़ से चिड़ीमार मोर के दो बच्चे पकड़कर लाया था।

ग. पिछली बार लेखिका ने दुकानदार से किस पक्षी के बच्चे के बारे में पूछा था?

उत्तर पिछली बार लेखिका ने दुकानदार से मोर के बच्चों के बारे में पूछा था।

घ. लेखिका ने पिंजड़े को कहाँ रखकर खोला?

उत्तर लेखिका ने पिंजड़े को अपने पढ़ने–लिखने के कमरे में रखकर खोला।

ङ कुब्जा कौन थी?

उत्तर कुब्जा लेखिका (महादेवी वर्मा) द्वारा पाली गई एक अन्य मोरनी थी। उसे वह बड़े मियाँ से ही कुछ महीने बाद लेकर आई थीं। वह लंगड़ी और नाम के अनुरूप स्वभावतः कुब्जा ही थी।

च. लेखिका ने मोर मोरनी के क्या नाम रखे थे?

उत्तर लेखिका ने मोर का नाम 'नीलकंठ' और मोरनी के नाम 'राधा' रखे थे।

3. लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. कुब्जा का व्यवहार कैसा था?

उत्तर कुब्जा का व्यवहार स्वभावतः दुष्टता और कुटिलता से परिपूर्ण था। वह राधा को नीलकंठ के साथ देखते ही वह उसे मारने दौड़ती। अपनी चोंच की मार से उसने उसकी कलगी को, पंखों को नोच डाला था। इतना ही नहीं उसने उसके अंडे फोड़कर छितरा दिए। दूसरे अन्य जीव–जंतुओं के साथ भी उसकी मित्रता न थी।

ख. चिड़ियाघर के सदस्यों ने नवागंतुकों का स्वागत कैसे किया?

उत्तर चिड़ियाघर के सदस्यों ने नवागंतुकों का स्वागत कौतूहल के साथ ठीक उसी प्रकार किया जैसे नववधू के आगमन पर परिवार के लोग करते हैं। लक्का कबूतर अपना नाचना छोड़ उनके चारों ओर घूम–घूमकर गूटर–गूँ गूटर–गूँ की रागिनी अलापने लगा। बड़े खरगोश सभ्य सभासद के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल–कूद मचाने लगे। तोते उन्हें भली–भाँति देखने के लिए एक आँख बंद कर उनका परीक्षण करने लगे। ऐसा लगा जैसे उस चिड़ियाघर में भूचाल आ गया हो।

ग. पिंजड़ा कैसा था? उसमें पक्षी–शावक कैसे लग रहे थे?

उत्तर पिंजड़ा तार से बना छोटे आकार का था। वह अत्यंत संकीर्ण था। उसमें पक्षी–शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी जड़े चित्र के समान लग रहे थे।

घ. नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु कौन–सी थी? वे मेघ आने पर क्या करते थे?

उत्तर नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु वर्षा ऋतु थी। वे मेघ आने पर अपनी मंद केका की गूँज–अनुगूँज को तीव्र से तीव्रतर करते हुए मानो बूँदों के उतरने के लिए सोपान–पंक्ति बनाने लगते थे। मेघ की गर्जन के ताल पर नीलकंठ का तन्मय नृत्य आरंभ होता था और उसके वेग के साथ नृत्य का वेग बढ़ता जाता और केका स्वर मंद से मंदतर होता जाता।

ङ मोर के बच्चे का कायाकल्प कैसे होने लगा? वर्णन कीजिए।

उत्तर मोर के बढ़ते बच्चे का कायाकल्प इल्ली से तितली बनने के समान ही रंगमय ढंग से होने लगा। उनके सिर की कलगी सघन ऊँची तथा चमकीली हो गई। उनकी चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई तथा गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूप–छाँही तरंगें उठने–गिरने लगी तथा दक्षिण–वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। उनकी पूँछ लंबी हो गई तथा उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग प्रकट हो गए। आरंभ में जो तीतर के समान दिखने वाले अब मोर के आकर्षक रूप में अपनी सौंदर्य छटा बिखेरने लगे थे। मोर के रंग–रूप, आकार–प्रकार, स्वभाव से पूर्ण वे एक नई गरिमा पा चुके थे।

च. कुब्जा के आने से नीलकंठ पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर कुब्जा के आने से नीलकंठ का जीवन अवसादग्रस्त हो गया। राधा की दूरी से उसकी प्रसन्नता का अंत हो गया। वह प्रायः जाली घर से निकल भागता और भूखा–प्यासा अन्यत्र छिपा रहता।

छ. कुब्जा की मौत कैसे हुई?

उत्तर कुब्जा की मौत कजली नामक अल्सेशियन कुत्ती के दो दाँत उसकी गरदन पर लग जाने से हुई। बात यह थी कि एक दिन अपने स्वभावानुसार उसने उस पर भी चोंच से प्रहार कर दिया था। कजली की प्रतिक्रिया में उसकी दाँतउ उसकी गरदन पर चुभ गए।

4. मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न तीनों मोर पक्षियों ने लेखिका को पक्षी–प्रकृति की विभिन्नता से कैसे परिचित कराया?

उत्तर तीनों मोर पक्षियों ने अपनी–अपनी स्वभावगत विशेषताओं से, अपने–अपने क्रिया–कलाप के माध्यम से पक्षी प्रकृति की विभिन्नता से परिचित कराया।

नीलकंठ अपनी निडरता, दूसरे के प्रति कर्तव्य भावना तथा सेनापतित्व के गुणों से परिचित कराता है। जब तक वह जीवित रहा लेखिका के चिड़ियाघर के अन्य जीवों का संरक्षक और सेनापति बन कर रहा। मोर होने के कारण वह हिंसक था किंतु आवश्यक होने पर। वह कलाप्रिय वीर पक्षी था।

नीलकंठ की 'मादा' के रूप में राधा छाया की तरह उसके साथ रहती थी। उसकी प्रेम भावना अंतर्मुखी थी। हिंसा में उसकी रूचि नहीं थी। इसी कारण कुब्जा के अत्याचार को उसने चुपचाप सहा।

कुब्जा अपने नाम के अनुरूप ही दुष्ट स्वभाव की है। उसमें भी प्रेम भावन है किंतु ईर्ष्या और झगड़ालू स्वभाव उस पर हावी है। उसके इसी स्वभाव के कारण उसका अंत हो जाता है। मनुष्यों की प्रकृति की तरह ही पक्षियों में भी प्रकृति की विभिन्नता को तीनों मोर पक्षियों ने सामने रखा है।

5. सही विकल्प के सामने शुद्ध (✓) का चिह्न लगाइए :–

उत्तर क. मोर के

ख. वर्षा ऋतु

ग. मोर का

घ. संगम ले गई

6. सत्य / असत्य लिखिए।

उत्तर क. असत्य

ख. असत्य

ग. सत्य

घ. सत्य

ङ असत्य